दोहों को दोहा है सतसइयों में

☐ डॉ॰ सत्यपाल श्रीवत्स

रेखा प्रकाशन, कैलाश नगर, निम्बाहेड़ा, राजस्थान द्वारा प्रकशित 725 दोहों के संग्रह की प्रस्तुत रचना 'चादर मैली मत करो' के रचनाकार ए. बी. सिंह इससे पहले अपने ग्यारह दोहा-सतसई संग्रह- प्रकाशित करके हिन्दी कवि जगत् में अपना विशिष्ट स्थान बना चुके हैं। यही कारण है कि इनका गिनीस बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में नाम दर्ज किया जा चुका है।

अब तक 21000 से अधिक स्व रचित दोहों में कवि सिंह ने सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, वैज्ञानिक आदि सभी प्रकार के विषयों को उजागर किया है। इसके साथ-साथ इन्होंने वर्तमान समय की ज्वलन्त समस्याओं जैसे पर्यावरण-संरक्षण, नशा-मुक्ति, जनसंख्या नियन्त्रण, सर्वधर्मसमभाव, सी.टी.बी.टी., साक्षरता, कृषि तथा उद्योग धन्धे, एड्स-नियन्त्रण, साक्षरता- अभियान, बाल-श्रम नियन्त्रण आदि अनेक समस्याओं को भी अपने दोहे-सतसइओं में समाहित किया है।

कवि सिंह की प्रदूषण-नियन्त्रण-समस्या पर तो गहरी पकड़ है। पर्यावरण-संरक्षण पर देश में जहां-कहीं पर भी कोई सेमिनार या सम्मेलन होता है यह वहां अवश्य पहुँचते हैं और वहां अपने शोध लेख भी प्रस्तुत करते रहते हैं।

श्री ए.बी.सिंह पेशे के इन्जीनियर हैं। इन्होंने 1970 ई० में इन्जीनियर व्यवसाय में उपाधि प्राप्त करने के बाद दिल्ली स्थित नेश्नल फिजिकल लेबोरेटरी में प्रायौगिक प्रशिक्षण के लिए प्रवेश ले लिया था। इसके लिए इनका चयन भारत सरकार की ओर से ही यथानियम किया गया था। अभी यह वहां अपनी प्रशिक्षण अवधि पूरी भी नहीं कर पाए थे तो इनका चयन के०के० सिन्थेटिक्स, कोटा में मैनेजमेण्ट प्रशिक्षण के लिए हो गया था। वहां चार वर्ष कार्य करने के बाद इन्हें1975 ई० में सीमेण्ट प्लाण्ट निम्बाहेड़ा (राजस्थान) में भेज दिया गया था। तब से यह वहीं पर कार्यरत हैं। इस समय यह जे.के.पावर, चितौड़गढ़ में उपाध्यक्ष और प्लाण्ट इन्चार्ज हैं। यह देश का पहला धुँआ रहित प्लाण्ट है जो कोयले की सहायता से चलता है।

संस्कृत के किसी कवि ने ठीक ही कहा है कि महान् व्यक्ति वह होता है जो आत्मसम्मान को सब से अधिक महत्व देता है- ''मानो हि महतां धनम्''। 'चादर मैली मत करो' का कवि भी संस्कृत- कवि के इस प्रकार के मूल्यांकन का समर्थन करता हुआ कहता है-

'इज्जत सदा बचाइये, भूलो धन सामान।
यह जब जाती है कभी, धीमा पड़ता ज्ञान॥'' (पृ० 23)

ऐसा प्रतीत होता है कि कवि सिंह का विश्वास-भारतीय परम्परानुसार संयुक्त परिवार में है। इसीलिए वह इसके समर्थन में इस प्रकार अपना अभिमत प्रगट करता है-

''ताकत बढ़ती है अधिक, एक रहे परिवार।
गलत लोग होते नहीं, सिर पर कभी सवार॥'' (पृ० 30)

कवि का मानना है कि मनुष्य को किसी दूसरे पर निर्भर न रहकर हर हालत में अपने पैरों पर खड़ा होने का प्रयत्न करते रहना चाहिए-

''निर्भर मत रह और पर, यह करता कमजोर।
अपना बोझ उठाइये, बिना मचाये शोर॥'' (पृ० 37)

आजकल प्राय: देखा जाता है कि औसत लेखक और साहित्यकार तथा सामाजिक कार्यकर्ता मान सम्मान या पुरस्कार एवं धन प्राप्त करने के लिए कई प्रकार के उल्टे-सीधे तरीके अपनाने पर भी उतारू हो जाते हैं। कवि इन तरीकों को निन्दनीय समझता है। उसकी मान्यता है कि मनुष्य को फल की चाह किये बिना अपनी साधना में लगे रहना चाहिए। फल देना तो ईश्वर के अधीन है-

''मन को दुखी नहीं करो, पाने को धन-मान।
उचित काम करते चलो, कर साईं का ध्यान॥'' (पृ० 38)

कवि का विश्वास है कि अपने देश में खुशहाली लाने का सबसे बड़ा रहस्य है आपस में मिलकर रहना। वैमनस्य, द्वेष, विध्वंस का कारण बनाता है :-

''आपस में मिल बैठकर, झगड़ा करिये दूर।
इससे आती देश में, खुशहाली भरपूर॥'' (पृ० 40)

अपने निजी समय में उन्होंने साहित्य-साधना के क्षेत्र में नये आयाम छुए हैं। और एक कवि के रूप में और वह भी दोहा-सतसई के कवि के रूप में ख्याति अर्जित की है।

''कथनी करनी में सदा, कम अन्तर रख ध्यान।
जिसमें यह अन्तर मिटे, बनता वह भगवान्॥'' (पृ० 15)

इनके दोहों से प्रतीत होता है कि इनके चारों ओर के वातावरण में इनके द्वारा भोगा हुआ यथार्थ इनमें उतरकर शाश्वत सत्य का प्रतिनिधित्व करता है। यह अपने चारों और के समाज के हर व्यवसाय के प्राणी से पूरी तरह से जुड़े हुए प्रतीत होते हैं। इस दोहे में यही प्रतिबिम्बित होता है। -

''सब लोगों में देखिये कुछ होता हो ज्ञान।
उसको सदा उभारिये, वही बने पहचान॥'' (पृ० 13)

कवि सिंह ऐसा जीवन ही सुखद समझता है-

''कलम पकड़िये हाथ में, श्रम पर रख कर ध्यान।
दोनों का जब मेल हो, जीवन तब आसान॥'' (पृ० 20)

आजकल के समाज में जब आतंकवाद और भ्रष्टाचार का बोलबाला है और मानवीय मूल्य निरन्तर गिर रहे हैं। ऐसे समय में झूठी अफवाहें फैलाना एक भयंकर सामाजिक अपराध है। कवि इस बारे में खबरदार करता हुआ कहता है -

''अनजाने भी मत कभी, फैलाओ अफवाह।
पता नहीं इस भूल से, होता कौन तबाह॥'' (पृ० 23)

जैसा कि पहले भी कहा गया है कि कवि सिंह पर्यावरण के संतुलन के बारे में बड़ा जागरूक और सजग है। वह पेड़-पौधों के संरक्षण और संवर्धन का समर्थक ही नहीं बल्कि उस के लिए अपनी साक्रिय भूमिका भी निभाता है। उन्हें वेहताशा काटने का सख्त विरोधी है। इसी लिए वह इनकी रक्षा करना मानव जीवन के अस्तित्व के लिए अति महत्वपूर्ण समझता है -

''पेड़ों को मत काटिये, ये जीवन आधार।
इनके कारण भूमि पर, जीवन रहे बहार॥ (पृ० 50)

''पेड़ लगाना है कठिन, फल खाना आसान।
गलती अधिक निकालना, लोगों की है शान॥'' (पृ० 50)

कवि की मान्यता है कि छोटी से छोटी बुराई और बीमारी तथा शत्रु को बढ़ने से पहले ही खत्म कर देना चाहिए, अन्यथा बाद में किसी बड़ी हानि की सम्भावना हो सकती है। -

प्रतीकों के माध्यम से कवि इस दोहे में यही तथ्य उजागर करता है -

''चिनगारी पर जो सदा, देता चलता ध्यान।
आग नहीं तब लग सके, सबका बचे मकान॥'' (पृ 58)

श्रमिकों के प्रति उसकी गहन सहानुभूति है, प्यार इसीलिए है। उसका मानना है कि जिसके हृदय में काम की कदर है वह कभी भी श्रमिक का अपमान और उपेक्षा सहन नहीं कर सकता। इस संदर्भ में कवि का यह दोहा द्रष्टव्य है -

''जानकार जो कामका, उसका सच अनुमान।
नहीं श्रमिक का कीजिए, किसी तरह अपमान॥'' (पृ० 64)

आजकाल विश्व भर में बाल मजदूरी के विरुद्ध घोर आक्रोश है। इसलिए कवि भी सम्बोधन के स्वर में इस कुप्रथा को समाप्त करने का आह्वान करता है -

''बाल श्रमिक से काम ले, नहीं करो अन्याय।
खत्म करो यह कुप्रथा, सोचो सही उपाय॥'' (पृ० 68)

कवि ए. बी. सिंह अपनी रचनाओं के माध्यम से हिन्दी काव्य जगत में अपना विशिष्ट स्थान बना चुका है। 'चादर मैली मत करो' उनका बारहवां 'दोहासंग्रह' हिन्दी काव्य साहित्य के उपवन में नया पुष्प है।

संपर्क : 47/5, रूप नगर हाऊसिंग कालोनी, जम्मू-180 013

पारंपरिक लोक-संगीत का आयोजन

23-24 नवंबर, 2001 को अकैडमी द्वारा सीमा क्षेत्रीय विकास कार्यक्रमों के अन्तर्गत क्रमशः डुग्गर के महान् बलिदानी किसान बावा जित्तो तालाब झिड़ी (शामाचक्क) और गवर्नमैंट हायर सकेंड्री स्कूल मंडाल-फलाहें (ब्लाक सतवारी) में पारंपरिक लोक-संगीत का आयोजन किया गया। प्रदेश के प्रसिद्ध लौक-गायक श्री गिरधारी लाल डोगरा एवं साथियों ने बावा जित्तो से संबंधित लोक-गाथा (कारक) सुनाकर समां बांध दिया। बावा के तालाब पर स्नान के लिए आए हजारों श्रद्धालुओं ने कार्यक्रम का भरपूर आनन्द लिया। मंडाल-फलाहें में स्कूल के विद्यार्थियों और स्थानीय लोगों ने लोक-गीतों और लोक-गाथाओं के कार्यक्रम को सुना और सराहा।

० सुगम-संगीत के कार्यक्रमों का आयोजन

5-6 अक्तूबर, 2001 को क्रमशः गवर्नमेंट हायर सकेंड्री स्कूल रामगढ़ (सांबा) और गवर्नमेंट हायर सकेंड्री स्कूल घगवाल (कठूआ) में सुगम-संगीत के कार्यक्रम का आयोजन किया गया। राज्य के प्रसिद्ध गायक श्री रमन स्लाथिया एवं साथियों ने डोगरी, पंजाबी और हिन्दी गीत गाकर विद्यार्थियों और स्थानीय लोगों का मनोरंजन किया।

19-23 अक्तूबर, 2001 को सीमा क्षेत्रीय विकास कार्यक्रमों की कड़ी के रूप में क्रमशः गवर्नमेंट हाई स्कूल विजयपुर (सांबा), गवर्नमेंट हाई स्कूल हीरानगर (कठूआ), गवर्नमेंट हाई स्कूल टल्होट (सांबा), न्यू नेशनल हाई स्कूल रणवीर सिंह पुरा और हायर सकेंड्री स्कूल अखनूर में सुगम-संगीत के कार्यक्रम आयोजित किये गये। राज्य के प्रसिद्ध गायक श्री नरेश कुमार एवं साथियों द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रमों को विद्यार्थियों और स्थानीय लोगों ने बहुत सराहा।

० अभिनय कार्यशाला-2001 का आयोजन

30 अक्तूबर से 4 नवंबर तक चलने वाली अभिनय कार्यशाला का आयोजन अभिनव सभागार में किया गया। राज्य अकैडमी के सचिव श्री बलवंत ठाकुर ने कार्यशाला का उद्घाटन किया। इस अवसर पर रंगकर्मी, कालेज के विद्यार्थी, रंगमंच प्रेमी और विभिन्न भाषाओं के नाटककार उपस्थित थे। उक्त अभिनय कार्यशाला का संचालन सुप्रसिद्ध नाट्य विशेषज्ञ श्री राएस्टन अवेल और श्री हरीश खन्ना ने किया।

❑